पक्षियों का प्रेम गीत

कुछ मनुष्य असीम आनंद पाने के लिए दवाइयों और अल्कोहल का सहारा लेते हैं। उसी तरह नर चिड़िया किसी मादा चिड़िया को रिझाने के लिए गाना गाते समय जिस आनंद की अनुभूति करती है, वह उसे शायद अकेले गाते हुए कभी प्राप्त नहीं होता।

ज़ेब्रा फिंच एक गाने वाली चिड़िया है, जो समूह में रहती है। जापान के राइकेन ब्रेन साइन्स इंस्टीट्यूट के नील हेसलर और या-चुन हांग ने अपने अध्ययन में पाया कि जब नर ज़ेब्रा फिंच किसी मनचाही संगिनी के लिए गाता है तो उसके दिमाग के एक विशेष हिस्से की तंत्रिकाएं सक्रिय हो जाती हैं। इस हिस्से को वीटीए कहते हैं।

मानव मस्तिष्क का इसी के समतुल्य हिस्सा तब सक्रिय होता है जब वे कोकेन जैसी नशीली दवाइयों का सेवन करते हैं। इससे दिमाग डोपामीन नामक एक पदार्थ बनाकर स्रावित करता है जिसे मस्तिष्क का पारितोषिक रसायन भी कहते हैं।

फिंच के मस्तिष्क में डोपामीन के स्रवण से वह क्षेत्र सक्रिय हो जाता है जो गायन और सीखने की प्रक्रिया का समन्वयन करता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि ऐसी स्थिति में गाना फिंच के लिए पारितोषिक की अनुभूति प्रदान करता है जिसके फलस्वरूप फिंच और गाने के लिए प्रोत्साहित होता है।

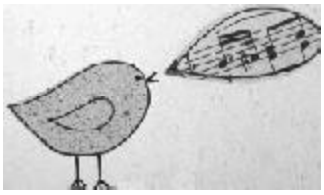

हेसलर कहते हैं कि यह एक प्रत्यक्ष प्रमाण है कि मादा चिड़िया के लिए गीत गाना नर चिड़िया के लिए पारितोषिक पा लेने की भावना जगाता है। इसके साथ ही वह जोड़ते हैं कि यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं हैं क्योंकि पक्षियों में इस तरह की प्रणय प्रार्थना प्रजनन के समय बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। नार्थ कैरोलिना के ड्यूक विश्वविद्यालय के पक्षी तंत्रिका विज्ञानी एरिक जारविस के अनुसार इस अध्ययन से पता चलता है कि नर पक्षी का गायन उसके तंत्रिका संचार और वी.टी.ए. में स्थायी परिवर्तन कर सकता है। जारविस का मानना है कि अभी यह कहना कठिन है कि नर का मस्तिष्क क्या वाकई में ज़्यादा खुश होता है। दूसरी ओर, हेसलर सोच रहे हैं कि इसी प्रकार के प्रयोग मादा फिंच के साथ करके यह देखें कि इस प्रकार की प्रणय-प्रक्रिया क्या मादा को भी समान रूप से आनंदित करती हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***